ब्रह्माकुमारीज़ वार्षिक सेवा-योजना (2014-15) का विषय

परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

सृष्टि में समय-समय पर छोटे और बड़े परिवर्तन होते आये हैं जैसे कि दिन के चार प्रहर होते हैं, बारी-बारी आते-जाते रहते हैं। ऋतुएँ भी – सर्दी, पतझड़, बसन्त, गर्मी, बरसात के क्रम से अपने-अपने समय पर अपना प्रभाव डालती हैं। मानव जीवन भी बचपन, युवा, अधेड़ और वृद्ध अवस्था पार कर पुन: बचपन अवस्था में आ जाता है। इसी प्रकार चार युग – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग भी बारी-बारी आते और जाते हैं। ये परिवर्तन सबको दिखाई देते हैं अथवा सब इन्हें अनुभव करते हैं परन्तु आज हम बात कर रहे हैं महापरिवर्तन की। यह महापरिवर्तन क्या है और कब होता है?

बसन्त से पहले बड़ा परिवर्तन

परिवर्तन का साधारण अर्थ है, कोई चीज़ अच्छी से और अच्छी बन जाए या बुरी से और बुरी बन जाए परन्तु महापरिवर्तन शब्द तब प्रयोग होता है जब कोई एकदम अच्छी से एकदम बुरी बन जाए या एकदम बुरी से एकदम अच्छी बन जाए। उदाहरण के लिए यूँ तो सभी ऋतुओं का अपना-अपना महत्व है परन्तु सबसे अच्छी ऋतु है बसन्त। बसन्त में फूल खिलते हैं, ना ज्यादा गर्मी, ना ज्यादा सर्दी, सुहावना वातावरण होता है परन्तु यह इतनी अच्छी बसन्त ऋतु कैसे आई? प्रकृति में आए एक बड़े परिवर्तन के बाद। बसन्त से पहले पतझड़ आई, वृक्षों के पुराने पत्ते पूरी तरह गिर गए, प्रकृति लगभग बेरंग-सी हो गई। चारों तरफ सूखे वृक्ष नज़र आने लगे। मानो प्रकृति ने किसी विशेष उद्देश्य से पुराने सभी निशान मिटा दिए हों। कुछ नया करने के लिए पुराने को मिटाना पड़ता है। प्रकृति ने भी आँधी, तूफान चलाकर पुराने को झाड़-झाड़ कर गिरा दिया, नए के लिए पृष्ठभूमि तैयार की और फिर सूखे पेड़ों पर हरी-हरी कोपलें फूट पड़ीं। देखते ही देखते हर शाखा, हरे मखमल की डाल नज़र आने लगी और चारों ओर प्राकृतिक आनन्द उमड़ पड़ा। जिस प्रकार हर वर्ष प्रकृति में यह बड़ा परिवर्तन आता है उसी प्रकार हर कल्प में सृष्टि में भी एक महापरिवर्तन आता है। वह भी सतयुग और कलियुग के बीच में (संगम पर) घटित होता है जिसके परिणाम स्वरूप ही सतयुग का आगमन होता है। वही समय अब चल रहा है।

समूल परिवर्तन नहीं होता

महापरिवर्तन और समूल परिवर्तन में अन्तर होता है। हम महापरिवर्तन की बात कर रहे हैं, समूल परिवर्तन की नहीं। जैसे प्रकृति के परिवर्तन में आँधी और तूफान द्वारा केवल पत्ते झड़े, वृक्ष तो वही रहे। इसी प्रकार कलियुग के अन्त में भी जड़-चेतन का समूल नाश नहीं होता, केवल महापरिवर्तन होता है क्योंकि पृथ्वी, सूर्य, चाँद, ग्रह, नदी, पर्वत – ये सब अनादि हैं। इनका नाश तो कभी हो ही नहीं सकता। भूगोल में इनकी आयु करोड़ों वर्षों तक भी मापी जाती है। महापरिवर्तन में इन सबका कुछ नहीं बिगड़ता। हाँ, यदि मानव ने इनमें से किसी के साथ भी कुछ छेड़-छाड़ की होगी तो उसका परिवर्तन होकर ये अपने मूल रूप में आ जाएंगे। जैसे समुद्र के किनारे बसे शहरों से समुद्र अपना क्षेत्र वापस ले लेगा। कटे हुए पहाड़ अपना मूल रूप पुन: प्राप्त करेंगे। जैसे प्रकृति विभिन्न प्राकृतिक आन्दोलनों के ज़रिए अपना मूल आदिकालीन सतयुगी रूप पुन: प्राप्त कर लेगी इसी प्रकार कलियुग में कलाहीन, शक्तिहीन, पवित्रताहीन आत्मा भी आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा अपना 16 कला सम्पूर्ण रूप पुन: धारण कर लेगी, इसी का नाम महापरिवर्तन है। इस महापरिवर्तन में एक परिवर्तन तो ईश्वरीय ज्ञान द्वारा

संस्कारों का होता है और दूसरा परिवर्तन सामूहिक देह परिवर्तन भी होता है।

सृष्टि-नाटक का अन्तिम छोर

यूँ तो वृक्षों के कुछ-कुछ पत्ते सारा साल टूटते-झड़ते रहते हैं परन्तु सारा वृक्ष पत्ते-विहीन केवल पतझड़ में ही होता है। सृष्टि-चक्र में भी आत्माएँ भिन्न-भिन्न समय में देह त्याग कर नया देह लेती रहती हैं परन्तु अधिकतम आत्माएँ सृष्टि-मंच को खाली कर अपने घर परमधाम वापस चली जाएँ, ऐसी महामृत्यु कलियुग के अन्त में ही आती है। अन्त के बाद आदि होती है। सृष्टि को नए सिरे से आबाद करने के लिए दैवी संस्कारों वाली आत्माओं को परमधाम से तुरन्त आकर इसे सतयुग के रूप में प्रारम्भ करना है। यह सृष्टि नाटक के अन्तिम छोर का समय है। इसी समय इस ड्रामा के मुख्य अभिनेता, निर्माता, निर्देशक परमात्मा पिता साधारण मानव तन में अवतरित हो नाटक के आदि मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं। मानवकृत नाटक भी इस विशाल सृष्टि-ड्रामा की नकल पर बने होते हैं। नाटकों या फिल्मों में भी हम देखते हैं कि जब नाटक अन्तिम छोर पर पहुँच जाता है तब अचानक छिपा हुआ हीरो प्रकट हो जाता है। नाटक में जो रहस्य होता है वो एकदम खुल जाता है। सृष्टि-ड्रामा के भी सभी राज़ परमात्मा पिता के प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होने के बाद ही खुलते हैं। सन् 1937 से अर्थात् पिछले 78 वर्षों से परमात्मा शिव सृष्टि-ड्रामा का सत्य ज्ञान दे रहे हैं जिसे ब्रह्माकुमारी बहनें और भाई जन-जन तक पहुँचाने में लगे हैं।

महापरिवर्तन में ईश्वरीय शक्तियों का योगदान

गुणों और शक्तियों को देखा नहीं जा सकता। व्यवहार, कर्म, सम्बन्ध में आने पर ही महसूस किया जाता है कि अमुक में शान्ति की शक्ति है, सहनशक्ति है आदि-आदि। भगवान के गुण और शक्तियों को हम मुनष्य कैसे अनुभव करें? इसके लिए उन्हें भी धरती पर आकर अल्पकाल के लिए पराया शरीर उधार लेना पड़ता है। प्रजापिता ब्रह्मा उन्हें अपना शरीर उधार देते हैं और बदले में सतयुगी सृष्टि की बादशाही का एवज़ा पाते हैं। परमात्मा अनादिकाल से हैं और सूर्य भी अनादि काल से है। परमात्मा परम शक्ति है और सूर्य भी प्रकृति की शक्ति है। सूर्य की ऊर्जा की तरफ हमारा ध्यान अभी गया, इससे पहले हमने सौर ऊर्जा से बिजली आदि बनाने का प्रयोग क्यों नहीं किया? क्योंकि कहा गया है, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। अब तक हमारे पास अन्य ऊर्जा संसाधन बहुतायत में थे और हम मनमाने ढंग से, लापरवाही से उनका उपभोग कर रहे थे परन्तु अब जब उनके स्रोतों (कोयला, डीजल, पेट्रोल) के समाप्त होने की स्थिति दिखने लगी तो एक तरफ हम बचत योजनाएँ चला रहे हैं और दूसरी तरफ कोई अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत खोजने में लगे हैं। सूर्य इस प्रकार की ऊर्जा का बड़े से बड़ा स्रोत है। सौर-ऊर्जा के उपयोग पर प्रयोग करने की ओर हमारा ध्यान समयानुसार अभी गया।

शक्तियाँ प्राप्त करने की अपारम्पारिक विधि

जैसे ऊर्जा के स्थूल स्रोत घट रहे हैं उसी तरह मानव के भीतर भी सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, सहनशीलता ..... ये ऊर्जाएँ घट रही हैं। इनकी पूर्ति के लिए हमारा परम्परागत साधन भक्ति रहा है। भक्तिमार्ग में भी हम परमात्मा को याद करते थे, उनसे गुण और शक्तियों की भीख मांगते थे परन्तु मांगने से कुछ नहीं मिला। अत: मांगने की भेंट में कोई अपारम्परिक विधि चाहिए जो भक्ति से ज्यादा कारगर हो। उस विधि से मानव को सशक्त करने का संकल्प स्वयं परमात्मा को भी आया इसलिए कहा जाता है, परिस्थिति पुरुष को जन्म देती है। इसके लिए वे साकार तन में अवतरित हो राजयोग सिखाते हैं। जैसे सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति अल्पकाल के लिए तो धूप में खड़े होने से भी हो जाती है पर दिन-रात सहजता से कई रूपों में ऊर्जा मिलती रहे उसके लिए सौर-ऊर्जा तकनीक अपनानी पड़ती है।

इसी प्रकार अल्पकाल की आन्तरिक ऊर्जा मन्दिर में जाने से मिल जाती है परन्तु सदाकाल की, हर समय उपलब्ध रहने वाली आन्तरिक ऊर्जा के लिए राजयोग की तकनीक अपनानी पड़ती है।

सूर्य प्रकाश का बहुत विशाल गोला है। उसकी किरणों को हम पैराबोलिक प्लेट और रिसीवर के माध्यम से एकत्रित कर पानी को भाप में बदलते हैं। इसी प्रकार परमात्मा पिता भी सर्वशक्तिवान प्रकाशमान बिन्दु हैं। उनसे भी निरन्तर स्नेह की, शक्ति की, मोड़ने की, जोड़ने की, सहयोग की, समेटने की, विस्तार करने की, याद करने की, भूलने की, समाने की, परखने की, निर्णय लेने की, पवित्रता की आदि शक्तियाँ प्रवाहित होती रहती हैं। राजयोग के माध्यम से हम अपने आत्म स्वरूप में टिक कर इन शक्तियों को अपने में ग्रहण करते हैं फलस्वरूप इन शक्तियों में मास्टर बनते जाते हैं। जैसे मास्टर स्नेह के सागर, मास्टर शान्ति के सागर, मास्टर पवित्रता के सागर आदि-आदि।

आज चारों ओर इन ईश्वरीय शक्तियों का अकाल पड़ा हुआ है, इन्हीं की कमी के कारण घर-घर और गाँव-गाँव अपराध स्थल बना हुआ है, ऐसे में राजयोग द्वारा ईश्वरीय शक्तियों की प्राप्ति ईश्वर द्वारा दिया गया वरदान है। इन शक्तियों की धारणा से, कर्म व्यवहार में लाने से हम मनुष्य से देवता बन जाते हैं, यही महापरिवर्तन है जिसका समय अब चल रहा है। ❖

शिव ज्ञान सागर बरसा रहे हैं ज्ञानामृत

ब्रह्माकुमारी सन्तोष, तिलक नगर, नई दिल्ली

मेरा परिचय ज्ञान सागर शिव बाबा से तब हुआ जब दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में ब्रह्माकुमारीज़ का एक कार्यक्रम चल रहा था। जब वहाँ गई तो देखा, लाल प्रकाश ही प्रकाश है। प्रकाश के बीच एक नन्हा-सा डायमण्ड चमक रहा था। ध्यान उस डायमण्ड की ओर केन्द्रित था तथा मन बज रहे गीत में मग्न था। गीत था, 'एक नन्हा-सा बिन्दु, दिव्य सितारा, यह कितना है प्यारा, दिलों का सहारा'। इस दृश्य ने मुझे जादू की तरह आकर्षित किया। उस लाइट से मुझे माता-पिता की भासना आई और मेरा नया अलौकिक जन्म हो गया। इसके बाद दिल्ली, राजौरी गार्डन में क्लास करने जाने लगी।

कुछ महीने बाद दादी जी ने मुझे टीचर बहन के साथ मधुबन में बाबा से मिलने भेज दिया। मधुबन में हाल में जाकर बैठे और दादी प्रकाशमणि सभी भाई-बहनों से मिलने आ पहुँची। आते ही दादी जी ने कहा, आज जब मैं बाबा के कमरे में गई तो बाबा ने कहा, बच्ची चलना नहीं, उड़ना है। मैंने सोचा, कमाल है! यहाँ भगवान इन्हों से बातें करते हैं, फिर तो मैं अच्छी जगह आ गई हूँ। मधुबन में बाबा से मिलन मनाकर घर लौटी तो बाबा का कमरा बनाया और दोनों समय बाबा को भोग लगाने लगी। मेरे बाद मेरी बहन, उसके बच्चे भी ज्ञान में आ गए। अब हम दोनों की चार कन्याएँ बाबा के यज्ञ में समर्पित हैं। कमाल है बाबा की, कैसे हम सब का जीवन बदल दिया! जो स्वप्न में भी नहीं था वह साकार कर दिया। बचपन से ही भगवान के प्रति बहुत प्यार था। घर के सभी धार्मिक विचारों वाले थे। वे भगवान शिव को बड़ा महत्व देते थे। कहते थे, भगवान शिव पर जल चढ़ाने से वे जल्दी प्रसन्न होते हैं। उस समय यह नहीं मालूम था कि भगवान शिव ही परमपिता परमात्मा हैं। पहले हमने भगवान पर जल चढ़ाया अब प्यारे बाबा प्रतिदिन हम पर ज्ञानामृत बरसा रहे हैं। वाह हमारा भाग्य! ❖